Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

छन्दों के प्रयोग की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि

डॉ0 शालिनी साहनी
संस्कृत विभाग, आर0एम0पी0पी0जी0 कालेज, सीतापुर,उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 4
Page Number : 61-65

Publication Issue :
July-August-2021

Article History
Accepted : 03 July 2021
Published : 10 July 2021

शोध सारांश – वैदिक सूक्तों के अनुशीलन में देवता , ऋषि एवं छन्द का ज्ञान होना परम आवश्यक है। "छन्दः पादौ तुपेदस्य" कहकर छन्द की महत्ता सिद्ध की जाती है जैसे चरण विहीन व्यक्ति गतिमान नहीं होता उसी प्रकार छन्द के बिना वेद अथवा कोई भी काव्य ग्रन्थ गतिशील नही होता। देववाणी संस्कृत में षड्वेदांगों का परिशीलन करते हुए जब छन्दों का प्रसंग आता है तब कहा जाता है कि वेद–मन्त्रों के उच्चारणार्थ एवं विशुद्ध पाठार्थ छन्दों का ज्ञान परमावश्यक है। छन्दों का प्रयोग रस, भाव तथा वर्णन आदि के अनुरूप ही करना चाहिये। इनका प्रसंग विशेष में औचित्य के अनुरूप प्रयोग ही श्लाध्य होता है। यथा– अनुष्टुप् का प्रयोग उपदेशात्मक प्रसंगों में, वंशस्थ का नीतिवर्णनों में शार्दूलविक्रीडित का शौर्य–वर्णन या ओजपूर्ण उक्तियों वसन्ततिलका का वीर तथा रौद्र रस के प्रसंगों में एवं मन्दाक्रान्ता का वर्षो तथा विरह के प्रसंगों में प्रयोग समीचीन होता है। पद्मपुराणकार ने मानवीय–मनोविज्ञान एवं उनके भावनाओं के उत्कर्षोपकर्ष के अनुरूप अपनी रचना में छन्दों का बड़ा ही सफल एवं मनोवैज्ञानिक प्रयोग किया है। पद्मपुराण में अध्यायों के प्रारम्भ में भूमिका , अध्यायों की समाप्ति के सूचनार्थ ,प्रश्नात्मकता की स्थिति में सम्वाद–परिवर्तन आदि की स्थिति में छन्द–परिवर्तन की योजना कों ही माध्यम बनाया गया है । कहीं–कहीं आकाशवाणी, भविष्यवाणी, शाप , वरदान एवं लोकोक्तियों आदि के स्थान पर भी छन्द परिवर्तन किया गया है। वस्तुतः अनुष्टुप् ही समस्त पौराणिक साहित्य का मेरूदण्ड है। पद्मपुराण में श्लोकों की कुल संख्या स्वयं पद्मपुराण के अनुसार 55000 है। इनमें अनुष्टुप् छन्द में 47113 श्लोक है। शेष छन्दों में त्रिष्टुप की संख्या लगभग 825 है जबकि अन्य छन्द 514 है। पुराणों की लोकप्रियता का बहुत कुछ रहस्य छन्दों के इन समीचीन तथा सुचारू प्रयोग पर भी निर्भर है छन्दों के वैविध्यपूर्ण तथा मनोवैज्ञानिक प्रयोग का सबसे विशिष्ट पक्ष यह है कि इसी ने इन पुराणों को लयात्मक सम्पुट में बांधकर इसकी जीवन रक्षा तथा लोकप्रियता का आधार स्तम्भ तैयार किया है।

मुख्य शब्द–प्रायोगिक, भावानुरूप, पौराणिक, श्लाध्य, स्पन्दन, श्रुतबोध, पिंगलशास्त्र, छन्दशास्त्र।

देववाणी संस्कृत में षड्वेदांगों का परिशीलन करते हुए जब छन्दों का प्रसंग आता है तब कहा जाता है कि वेद–मन्त्रों के उच्चारणार्थ एवं विशुद्ध पाठार्थ छन्दों का ज्ञान परमावश्यक है। वैदिक सूक्तों के अनुशीलन में देवता , ऋषि एवं छन्द का ज्ञान होना परम आवश्यक है। "**छन्दः पादौ तुपेदस्य"** कहकर

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

छन्द की महत्ता सिद्ध की जाती है जैसे चरण विहीन व्यक्ति गतिमान नहीं होता उसी प्रकार छन्द के बिना वेद अथवा कोई भी काव्य ग्रन्थ गतिशील नही होता

"नाच्छन्दसि वागुच्चरति।" (निरूक्तवृति दुर्गाचार्य)[1]

भरतमुनि कहते है कि छन्द विहीन शब्द , शब्द नहीं है। यथा –

"छन्दहीनो न शब्दोऽस्ति , नछन्दः शब्द वर्जितम्।"

(नाट्यशास्त्र–भरतमुनि)[2]

कात्यायन के अनुसार

छन्दोभूतमिदं सर्व वाङ्मयंस्याद विजानतः ।
नाच्छन्दसि न चापृष्ठे शब्दश चरति कश्चन्।

(ऋग्यजुष् परि0 काव्यायन)[3]

वेदों की भांति लौकिक संस्कृत में भी छन्द तथा पादबद्धुता का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ है।

वैदिक मन्त्र छन्दों में रचे गये हैं अतएव वेदमन्त्रों को पापकर्म से निवारित करने वाले उपादान कहा गया है

"छादयति वा एनं छन्दांसि पापात्कर्मणः "

निरूक्त में छन्द के विषय में कहा गया है –

"छन्दांसि छादनात् " (निरूक्त दैवत काण्ड 7/3)[4]

छन्दशास्त्र का उद्भव एवं विकास एकादश शती के श्री रामानुजाचार्य के गुरू आचार्य यादव प्रकाश के पिंगल सूत्र टीका में उपलब्ध एक श्लोक द्वारा छन्दशास्त्र की प्राचीन परम्परा एवं विकास क्रम का यत्किञ्चित परिचय प्राप्त होता है ।

छन्दोज्ञानमिदं भवाद्भगवतो लेभे सुराणांपतिः

तस्माद् दुश्च्यवनस्ततः सरगुरू मण्डियनामस्त त माण्डव्यादपि सैतवस्तु तमृषि यस्किततः पिंगलस्तस्येदं यशसा गुरोर्भुविद्यृतं प्राप्याऽस्मदाधैः कृतम् ।

(पिंगलसूत्रटीका – आचार्य यादव प्रकाश)[5]

अर्थात "ईशानः सर्वविद्यानाम्" आदि कथनानुसार देवाधिदेव महादेव सभी विद्याओं के स्वामी है। अतः छन्दशास्त्र के भी वे ही मूल प्रवर्तक हैं महोदव से छन्द का ज्ञान इन्द्र को, इन्द्र से दुश्च्यवन को दुश्च्यवन से बृहस्पति को बृहस्पति से माण्डण्य को, माण्डयु से सैतव को, सैतव से यास्क को और यास्क से ज्ञान पिंमल को मिला ।

इस प्रकार पिंगलाचार्य सुव्यवस्थित छन्दशास्त्र के आचार्य सिद्ध होते हैं । पिगंलाचार्य को छन्दशास्त्र के आचार्य के रूप में इतनी ख्याति प्राप्त हुई कि छन्दशास्त्र पिंगलशास्त्र भी कहा जाता है । कालान्तर में इसी परम्परा को विकसित करते हुए कालिदास ने श्रुतबोध , गंगादास ने छन्दोमज्जरी एवं क्षेमेंन्द ने सुवृत्ततिलक नामक छन्द शास्त्रीय ग्रन्थ लिखे ।

छन्दों के प्रयोग से सम्बन्धित यह विचारचर्चा इस बिन्दु के आधार पर की गयी है कि छन्दों का प्रयोग भाव व प्रसंगों के अनुकूल होकर किस प्रकार विविध रचनाओं में किया गया है। यह शोध–पत्र विविध रचनाकारों एवं पुराणकारों के प्रयोगों का यहाँ उदाहरण रूप में समेटे हुए है।

आचार्य क्षेमेन्द्र कहते हैं –

तथाप्यवस्थासदृशैः साधुशब्दपदस्थिताः ।
सुवृतैरेव शोभन्ते प्रबन्धः सज्जना इव ।

(सुवृतन्त तिलक 3/12)[6]

अर्थात छन्दों के नियम विविध भावों के सन्दर्भ में आत्मा के स्पन्दन के विशिष्ट क्रम या विधि के प्रतिपादक होते हैं । "

प्रायः छन्दों के प्रयोग की अपनी प्रायोगिक विशेषतायें होती है। जिनके विषय में विभिन्न काव्यशास्त्रियों के अपने–2 विचार है। आचार्य क्षेमेन्द्र इस पर गम्भीरता से विचार करके कहते हैं –

काव्ये रसानुसारेण वर्णना नुगुणेन च।

कुर्वीत सर्ववृत्तानां विनियोगं विभागवित् ।

(सुवृत्ततिलक 3/7)[7]

छन्दों का प्रयोग रस, भाव तथा वर्णन आदि के अनुरूप ही करना चाहिये। इनका प्रसंग विशेष में औचित्य के अनुरूप प्रयोग ही श्लाध्य होता है। यथा– अनुष्टुप् का प्रयोग उपदेशात्मक प्रसंगों में, वंशस्थ का नीतिवर्णनों में शार्दूलविक्रीडित का शौर्य–वर्णन या ओजपूर्ण उक्तियों वसन्ततिलका का वीर तथा रौद्र रस के प्रसंगों में एवं मन्दाक्रान्ता का वर्षो तथा विरह के प्रसंगों में प्रयोग समीचीन होता है।

महाकवि कालिदास की कृतियों में छन्द प्रयोग देखे तो रस भावानुरूप छन्दों का प्रयोग महाकवि ने किया है। उदाहरण स्वरूप महाकवि जहाँ करूण रस के प्रसंग होते हैं वहॉ वे शोक रूपी स्थायी भाव को पुष्ट करने वाले मन्दाक्रान्ता, हारिणी एवं वसन्ततिलका जैसे छन्दों का प्रयोग करते है। यथा अभिज्ञान शकुन्तलम् का यह प्रसंग द्रष्टव्य है । यथा

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्यशब्दान्
पर्युत्सुको भवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः ।
तच्चे तसा स्मरति नूनमबोधपूर्वं
भावस्थिराणि जननान्तरसौह्रदानि।। (अभि0 5/2 वसन्तकितलका)[8]

इसी प्रकार महाकवि का सम्पूर्ण 'मेद्यदूत' 'मन्दाक्रान्ता' छन्द में है। यथा

"कश्चिद् कान्ता विरह गुरूणा – "

इसी प्रकार महाकवि ने गम्भीर विचारों को व्यक्त करने हेतु शार्दूलविक्रीडित एवं स्रग्धरा जैसे छन्दों का प्रयोग किया है। यथा

यास्यत्यद्यशकुन्तलेति ह्रदयं संस्पृष्ट मुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भित वाष्पवृत्तिकलुष श्चिन्ता जडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं ममतावदीदृशमिदृं पीडयन्ते गृहिणः
कथं तनया विश्लेषदुःखेर्नवैः स्नेहादरण्यौकसः ।
(अभि0 4/6 शार्दूलविक्रीडित)[9]

जहाँ नायक–नायिका की हार्दिक भावनायें हों या मन के उद्गार, उनको व्यक्त करने के लिए वे मालिनी तथा वंशस्थ जैसे छन्दों का प्रयोग करते हैं। यथा

इदं किलाव्याज मनोहरं वयुस्तपः क्षमं साधुयितुं य इच्छति ।
ध्रुंव स नीलात्पलपत्र धारया शमीलतां छेतुमृषित्यवस्यति ।। (वशंस्थ)
(अभि0 प्रथमोऽकः – 18)[10]

मालिनी
सरसिंजं अनुबिद्धु शैवलेनापिरम्यं
मलिनमपि हिमांशो लक्ष्मि लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मडनं नाकृतीनाम् ।।
(अभि0 प्रथमोऽकः – 20)[11]

महाकवि कोमल भावों एवं सुभाषितों आदि के लिए आर्या छन्द का प्रायः प्रयोग करते है उदाहरण

"आ परितोषाद् विदुषां नसाधमन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्य प्रत्ययं चेतः ।।
(अभिशा0 प्रथमोऽकः–2 आर्या छन्द)[12]

पौराणिक साहित्य में भी हमें छन्दों के सन्दर्भ में ऐसी विशिष्ट प्रायोगिक प्रवृत्ति प्राप्त होती है। जहाँ आख्यानोपाख्यान एवं उपदेशात्मक प्रसंगों में क्षेमेन्द्र के विचारों के अनुरूप ही अनुष्टुप् जैसे छोटे एवं विवरणात्मक छन्दों का प्रयोग हमें मिलता है। वहाँ भक्तिरस के प्रसंगों में भावनाओं की गम्भीरता, ओजस्विता एवं उत्साह की स्थितियों में शार्दूलविक्रीडित जैसे गम्भीर गति वाले छन्दों का अनेकशः प्रमाण प्राप्त होता है।

छन्दों का भाव एवं रसानुकूल विशेष प्रयोग हमें पद्मपुराण में दिखाई देता है। पद्मपुराण की कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभा पर यह पूर्णतः सिद्ध होता है । पद्मपुराणकार ने मानवीय–मनोविज्ञान एवं उनके भावनाओं के उत्कर्षोपकर्ष के अनुरूप अपनी रचना में छन्दों का बड़ा ही सफल एवं मनोवैज्ञानिक प्रयोग किया है। पद्मपुराण में अध्यायों के प्रारम्भ में भूमिका , अध्यायों की समाप्ति के सूचनार्थ ,प्रश्नात्मकता की स्थिति में सम्वाद–परिवर्तन आदि की स्थिति में छन्द–परिवर्तन की योजना कों ही माध्यम बनाया गया है । कहीं–कहीं आकाशवाणी, भविष्यवाणी, शाप , वरदान एवं लोकोक्तियों आदि के स्थान पर भी छन्द परिवर्तन किया गया है । विष्णु पुराण, नारद पुराण, भागवत पुराण , गरूड़ पुराण एवं पद्मपुराण सभी वैष्णव भक्ति से ओत–प्रोत , पुराणों में भावात्मक प्रवाह में स्तोत्रो में प्रायः अनुष्टुप् से भिन्न छन्दों का प्रयोग किया गया है। ऐसे स्थलों पर कवि ने भावोद्गम में परिवर्तन के साथ ही दूसरे छन्दों को ग्रहण किया है। जैसे उपजाति , शार्दूलविक्रीडित आदि । ऐसे ही संगीतात्मकता के कारण कवि ने प्रायः छोटे छन्दों का प्रयोग किया है। वहीं अन्य स्थानों पर धवनियों को बाँधे रखने के लिए मात्रिक की जगह वार्णिक सम– छन्दों का अधिक प्रयोग किया गया है। जैसे –

नमोऽस्तुते धर्म भृते वरानने , नमोऽस्तुते देवगणे कवन्दिते।
नमोऽस्तुते सर्वपवित्र पावने , नमोऽस्तुते सर्वजगत्सुपूजिते

(पद्मपुराण आदिखण्ड – 17/18)[13]

वस्तुतः अनुष्टुप् ही समस्त पौराणिक साहित्य का मेरूदण्ड है। पद्मपुराण में श्लोकों की कुल संख्या स्वयं पद्मपुराण के अनुसार 55000 है। इनमें अनुष्टुप् छन्द में 47113 श्लोक है। शेष छन्दों में त्रिष्टुप की संख्या लगभग 825 है जबकि अन्य छन्द 514 है। अनुष्टुप् की इस सतत् प्रवाहमान धारा में छोटे–छोटे लौकिक छन्द रूपी काव्य कुसुमों की भी कमी नहीं जो ने केवल इस पौराणिक साहित्य को अलंकृत एवं सुवासित करते है अपितु इसके काव्यगत तथा भावगत वैविध्य के भी सूचक है। उदाहणार्थ–"आदि–खण्ड" के प्रथम श्लोक में गोविन्द के चरणारविन्द की अर्चना हेतु प्रयुज्यमान अनुष्टुप् की जगह उपेन्द्रवज्रा छन्द को ग्रहण किया गया है । सृष्टि–खण्ड में भी आगे वर्णित 'पुष्कर माहात्म' के वर्णन में अनुष्टुप् के स्थान पर भूमिका स्वरूप पृथकत्व प्रतिपादनार्थ कवि स्रग्धरा जैसे लम्बे–लम्बे एवं गम्भीर छन्द का सहारा लेता है। जिससे कि वह विषय एवं भावना की गम्भीरता का शेषभाग के सामान्य वर्णन से भिन्नता बनाए रख सके। पुराणों में कथा–प्रवाह को विविध आख्यानों एवं उपाख्यानों के माध्यम से गति प्रदान की गई है। जिसके लिए प्रश्नात्मक शैली को अपनाया गया है । जिनमें अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग दर्शनीय है प्रश्नों की भाषा, सरल, संक्षिप्त एवं बोधगम्य होनी चाहिये जिनमें काव्यात्मकता के स्थान पर प्रष्टव्य विषय की प्रधानता होती है। यही कारण है कि ऐसे स्थलों पर कवि ने विवरण प्रधान अनुष्टुप् छन्द को ही प्रयुक्त किया है कहीं–2 स्थानापन्न के रूप में उपजाति का भी प्रयोग है । ब्रहमखण्ड में सनत्कुमार–नारद सम्वाद के बीच अचानक सनत्कुमार नारद को उपदेश प्रदान करने लगते है। सम्वाद के मध्य आगत इस उपदेश की ओर विशेष रूपेण हमारा ध्यान आकर्षित करने हेतु रचनाकार शार्दूलविक्रीडित जैसे गम्भीर छन्द का आश्रय लेता है। ऐसे ही पातालखण्ड में शिव पार्वती से वृन्द्रावन का रहस्य–कथन करने के बाद उसे सदैव गुप्त रखने के लिए कहते है। वृन्दावन के रहस्य को गुप्त रखना अत्यन्त आवश्यक है । इस बात पर बल देने के लिए पुनः वृन्दावन की ही प्रशंसा करते हुए अनुष्टुप् को छोड़ वसन्ततिलका छन्द को ग्रहण किया गया है। ऐसे परिवर्तनों की प्रवृत्ति हमें रामायण, महाभारत ,गुरूड–पुराण आदि अन्य साहित्यों में भी देखने को मिलती है।

पद्मपुराण में कथाओं की बीच हमें सम्वादों तथा परिसम्वादो भी विस्तृत योजना प्राप्त होती है ऐसे स्थलों पर भी रचनाकार भिन्न–भिन्न छन्दों की योजना द्वारा कथाओं से इन सम्वादों की भिन्नता की रक्षा करता है। इस प्रवृत्ति के प्रमाण रामायण एवं महाभारत में भी द्रष्टव्य है। आचार्य विश्वनाथ आदि काव्य शास्त्रियों ने महाकाव्यों के अध्यायो के अन्त में छन्द परिवर्तन का निर्देश किया है।यथा –

"एक वृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः।"

(साहित्य दर्पण – 6/ 320)[14]

यथा किरातार्जुनीयम् जैसे महाकाव्यों में हम देखते है कि प्रत्येक सर्ग के अन्त में छन्द परिर्वतन होता है। इसी प्रकार पद्मपुराण में भी विविध मनोवैज्ञानिक कारणों के उद्देश्य करके प्रायः अध्याय के प्रधान छन्द से इतर छन्द योजना हमें अध्याय के अन्तिम श्लोक में प्राप्त होती है।

जैसे लौकिक महाकाव्यों रामायण के कुछ प्रसंगों में देखा गया है कि जब कोई कथा या प्रसंग समाप्त हो जाता है तो नवीन कथा अथवा प्रसंग के सूचनार्थ कवि छन्द परिर्वतन कर दते है। पद्म पुराण में कवि ने ऐसे अवसरों पर भी अनुच्छेद परिर्वतन करने की जगह प्रथम विषय की समाप्ति एवं नवीन प्रसंग के प्रारम्भ के बीच विभाजन रेखा खींचने हेतु छन्द को परिवर्तित कर अनुष्टुप् से भिन्न, किसी अन्य छन्द का प्रयोग किया है। जिस प्रकार कथा प्रसंगों के बीच किसी पात्र के मनोभावों को इतिवृत से पृथक प्रदर्शित करने हेतु नाटकादियों में अधिकाशंतः कोष्ठकों का प्रयोग किया जाता है ठीक उसी प्रकार के उद्देश्यों के सन्दर्भ में पद्मपुराण के रचयिता ने कोष्ठक की जगह अनुष्टुप् –छन्द को परिवर्तित कर किस नवीन छन्द को ग्रहण किया है एवं कोष्ठक की आवश्यकता की पूर्ति की है। ऐसे स्थलों पर पात्र के मनोभावों की समाप्ति होते ही एवं पुनः मूलकथा का प्रवाह प्रारम्भ होते ही कवि फिर से छन्द परिवर्तित करते हुए प्रायः अनुष्टुप् छन्द को वापस अंगीकार कर लेता है । जैसे पद्मपुराण के आदि–खण्ड में मानसिक द्वन्द्व हेतु 'रथोच्दता छन्द' जबकि कोष्ठक रूपी द्वन्द्वात्मक भाव की समाप्ति पर वह पुनः अनुष्टुप् छन्द को स्वीकार कर लेता है।

पद्मपुराण में कवि ने कथाओं के प्रसंगों में कभी–कभी साधारण बातों को भी प्रस्तुत किया है जो प्रायः प्रासंगिक होने पर भी पूर्णनिरपेक्ष है एवं स्वतंत्र अस्तित्व रखते है ये साधारण उक्तियाँ प्रायः लोकोक्ति स्वरूप होंती है जिनके विषय पाप के दुष्परिणमों, धन की सारहीनता दुर्व्यसनों सोहानि आदि से सम्बद्ध है इस प्रकार के कई उदाहरण हमें पद्मपुराण एवं अन्य पुराण में प्राप्त होते है। इस प्रकार द्रष्टव्य है कि पद्यपुराण में कई स्थानों पर निम्न दृष्टियों से छन्दों के प्रयोग में विविधता है । जैसे –अध्यायों के बीच बीच में विविध प्रसंगों में छन्दों की गति माहात्म्य वर्णन, प्रश्नात्मकता, संवादों में छन्दों की गति, अध्यायों के अन्त में छन्दों की गति उचित होगी । पुराणों की लोकप्रियता का बहुत कुछ रहस्य छन्दों के इन समीचीन तथा सुचारू प्रयोग पर भी निर्भर है छन्दों के वैविध्यपूर्ण तथा मनोवैज्ञानिक प्रयोग का सबसे विशिष्ट पक्ष यह है कि इसी ने इन पुराणों को लयात्मक सम्पुट में बांधकर इसकी जीवन रक्षा तथा लोकप्रियता का आधार स्तम्भ तैयार किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 निरूक्तवृति दुर्गाचार्य
2 नाट्यशास्त्र–भरतमुनि
3 ऋग्यजुष् परि0 काव्यायन
4 निरूक्त दैवत काण्ड 7/3
5 पिंगलसूत्रटीका – आचार्य यादव प्रकाश
6 सुवृत्ततिलक 3/7
7 वही
8 अभि0 5/2 वसन्तकितलका
9 अभि0 4/6 शार्दूलविक्रीडित
10 अभि0 प्रथमोऽकः – 18
11 अभि0 प्रथमोऽकः – 20
12 अभिशा0 प्रथमोऽकः–2 आर्या छनद
13 पद्मपुराण आदिखण्ड – 17/18
14 साहित्य दर्पण – 6/ 320